InL; Ifpo

झारखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड
धुर्वा, राँची

विषय : स्वर्णरेखा और खरकई नदियों में जमशेदपुर में अत्यधिक जलकुंभी हो जाने के कारणों की जांच के बारे में।

प्रसंग : आपका पत्रांक G–887, दिनांक 18.4.2011

महाशय,

उपर्युक्त विषय एवं प्रसंग के संबंध में 'नीरि', नागपुर द्वारा तैयार की गई "Assessment of Environment Impact of Steel Slag Dumping at Jamshedpur" रिपोर्ट की प्रति उपलब्ध कराने के लिए आपको धन्यवाद। जून 2004 में तैयार की गई यह रिपोर्ट टिस्को द्वारा प्रायोजित है। मैंने यह निर्णय सरसरी तौर पर देखा है। इसके निष्कर्षों की समीक्षा होनी चाहिए। इसके पृष्ठ 32 पर 1. Regional Environmental Impact Assessment of Jamshedpur Region, 1995, 2. LCA of Steel Sector in India, 2001 नामक दो प्रतिवेदनों का जिक्र है। अगर आपके कार्यालय में उपलब्ध नहीं है तो इन प्रतिवेदनों की प्रतियां टाटा स्टील से प्राप्त करनी चाहिए।

इस बीच मुझे 'नीरि' द्वारा 2001 में सौंपी गई और टिस्को द्वारा प्रायोजित की गई एक अन्य रिपोर्ट Carrying Capacity based Development Planning for Jamshedpur Region की एक प्रति मुझे मिली है। इस रिपोर्ट में जमशेदपुर के 15 किलोमीटर की परिधि के क्षेत्र का पर्यावरण प्रभाव अध्ययन का प्रतिवेदन है और पर्यावरण प्रबंधन की योजना का उल्लेख है। इसमें प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, जल, वायु, मिट्टी पर औद्योगिक उत्पादन का प्रभाव और जनसंख्या वृद्धि के आधार पर तत्कालीन स्थिति की समीक्षा की गई है और 2021 तक की स्थिति का अनुमान लगाया गया है।

वर्ष 2001 में सौंपी गयी इस रिपोर्ट के अनुसार जमशेदपुर में वर्ष 2000 से 2021 तक स्टील उत्पादन का अनुमान दिया गया है, जिसके अनुसार वर्ष 2000 में 3 मिलियन टन (एम.टी.), 2005 में 4.50 एम.टी., 2011 में 6 एम.टी. और 2015 में 7.50 एम.टी. उत्पादन का अनुमान लगाया गया है। आपको मालूम है कि अकेले टाटा स्टील ने अब तक जमशेदपुर में 7.50 एम.टी. उत्पादन का

लक्ष्य पूरा करने के लिए आवश्यक संरचना खड़ा कर लिया है और शीघ्र ही इसे 10 एम.टी. तक ले जाने की योजना पर कार्य चल रहा है। 2001 की 'नीरि' की रिपोर्ट से अलग इस कार्य योजना के लिए टाटा स्टील ने झारखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से अनुमति अवश्य प्राप्त किया होगा। इसके लिए पर्यावरण प्रभाव अध्ययन और पर्यावरण प्रबंधन योजना प्रतिवेदन भी समर्पित किया होगा। इन प्रतिवेदनों के साथ 2001 में 'नीरि' द्वारा सौंपे गये प्रतिवेदन का तुलनात्मक अध्ययन जनहित में अवश्य किया जाना चाहिए।

आपको मालूम होगा कि उन्नत पर्यावरणीय मापदंड (8 लीफ) के आधार पर दुनिया भर के स्टील प्लांटों का अध्ययन संयुक्त राष्ट्र संघ की पहल पर करवाया जा रहा है। भारत वर्ष में यह अध्ययन दिल्ली की संस्था 'सेन्टर फार साइंस एंड इन्वायरनमेंट (सी.एस.ई.) द्वारा करवाया जा रहा है, जिसमें निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्रों की प्रायः सभी इस्पात उत्पादक इकाईयां शामिल की गई हैं। मेरी जानकारी के मुताविक टाटा स्टील ने इस अध्ययन में शामिल होने से इंकार कर दिया है। इस आशय का एक लिखित पत्र टाटा स्टील प्रबंधन ने सी.एस.ई. के पास भेजा है।

ऐसी स्थिति में यह आवश्यक प्रतीत हो रहा है कि जमशेदपुर के संदर्भ में 'नीरि' द्वारा 1995, 2001 और 2004 में तैयार किए गए पर्यावरण प्रभाव अध्ययन एवं पर्यावरण प्रबंधन प्रतिवेदनों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तथा जमशेदपुर में टाटा स्टील के द्वारा 10 एम.टी. उत्पादन क्षमता वृद्धि के लिए समर्पित प्रतिवेदनों का तुलनात्मक अध्ययन भी इनके साथ किया जाए। साथ ही जमशेदपुर के पर्यावरण तथा खरकई एवं स्वर्णरेखा नदियों की वर्तमान स्थिति का एक अध्ययन भी इस वर्ष मानसून के पूर्व किया जाए ।

अनुरोध है कि उपर्युक्त प्रतिवेदनों में से जो प्रतिवेदन झारखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के पास उपलब्ध नहीं हैं, उन्हें उपलब्ध कराने के लिए आपके द्वारा टाटा स्टील से अनुरोध किया जाए और उपलब्ध प्रतिवदेन की एक–एक प्रति मुझे भी सशुल्क अथवा निःशुल्क उपलब्ध कराने की कृपा की जाए।

सधन्यवाद,

भवदीय

¼l j ;| jk;½